बच्चो को विनयवान एवं गुणवान बनाने के लिए

Jainism With Art 6

कला द्वारा संस्कार सिंचन

...प्रेरणा...

प.पू. आचार्य श्री नयचंद्रसागरसूरीश्वरजी म.सा.

प्यारे बच्चो !
अलग-अलग प्रकार के चित्र दिये गये।
पुण्य की प्रवृत्ति वाले चित्र के आगे (✓) करे एवं
पाप की प्रवृत्ति वाले चित्र के सामने (✗) करे।

Dear Children !
Identify Punya Activity & Paap Activity.
Tick " ✓ " for Punya & " ✗ " for Paap Activity

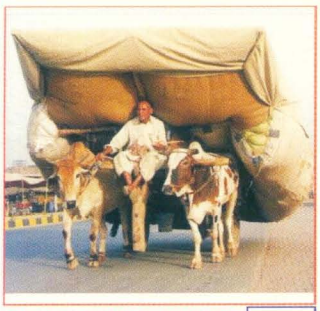
OVER LOADING ANIMALS ☐

GIVING GRAINS TO PIGEON ☐

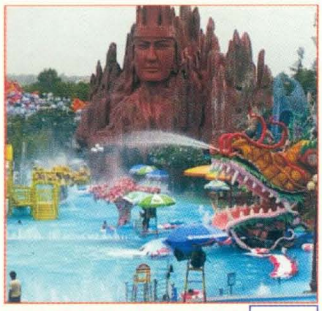
VISITING WATER PARK ☐

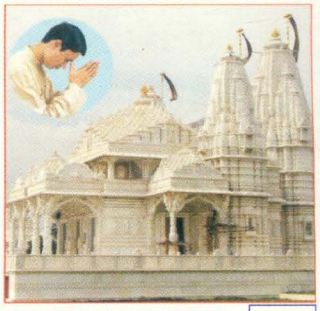
NAMO JINANAM ☐

KILLING A COW ☐

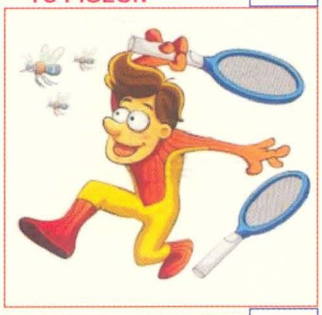
KILLING MOSQUITOES ☐

DOING BHAKTI ☐

PLAYING PSP ☐

FIGHTING ☐

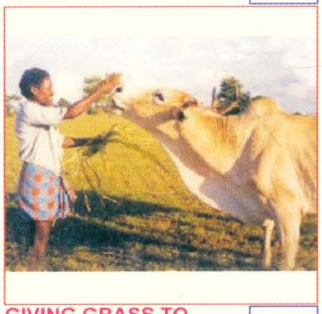
GIVING GRASS TO COW ☐

WATCHING MOVIE ☐

SERVING ELDERS ☐

STEALING ☐

PERFORMING AARTI ☐

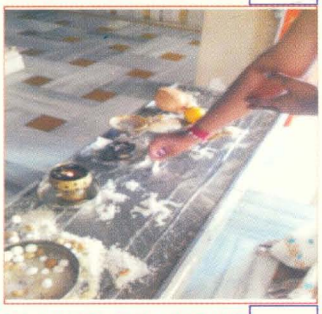
FILLING BHANDAR ☐

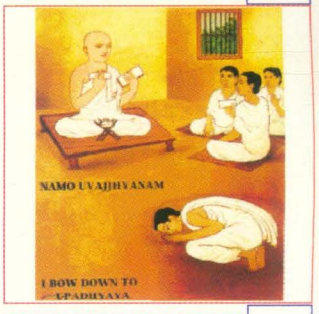

MATTHAENA VANDAMI ☐

ABHAYDAAN ☐

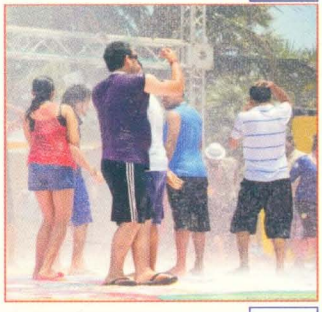
RAIN-DANCE ☐

EATING AT HOTEL ☐

BACK ANSWERING PARENTS ☐

बच्चो को विनयवान एवं गुणवान बनाने के लिए

Jainism with Art-6

कला द्वारा संस्कार सिंचन

आजके विकासशील युगमें बच्चोंके लिए केवल कथा पर्याप्त नहीं है, परंतु कथाओंके साथ सुरेख चित्रो और तत्वज्ञान रुचिकर बन शकता है।

बाल्य अवस्थामें चित्रो बनाना और रंग भरनेका अनेरा आकर्षण होता है। महा-पुरुषोंके जिवन चित्रके माध्यमसे भौतिक-वादको हटाकर आध्यात्मिक जिवन बनानेका संकल्प यदि बालक करेगा तो जिवन उत्थानका प्रारंभ अवश्य होगा,। जिनशासनका उत्तम रक्षक बनेगा ऐसी शुभ भावना के साथ यह पुस्तिका श्रेणी प्रस्तुत हो रही है।

बालकोंमें बीज बोनेका यह प्रयत्न वटवृक्षके रूपमें जिनशासनको मिले और भावी शासन उज्वल बने ऐसी भावना के साथ...

नयचंद्रसागर

...प्रेरणा...
वर्धमान तपोनिधि
पू.आ.श्री नयचंद्रसागरसूरिजी म.सा.

...मार्गदर्शक...
मुनि श्री ऋषभचंद्रसागरजी म.सा.
मुनि श्री शीतलचंद्रसागरजी म.सा.

...संयोजक...
मुनि श्री सुमतिचंद्रसागरजी म.सा.

...प्रकाशन...
पूर्णानंद प्रकाशन

...संचालक...
गीरीशभाई दोशी / जीज्ञेशभाई शाह
Mo. 79779 44600 / 73833 90712

...अनुमोदना...
संस्कारवाटिका, चेन्नाई
गुडबोय-पं.श्री वेराग्यरत्नविजयजी म.सा
लर्न एन्ड टर्न-पू.पं.श्री मनोभूषणविजयजी म.
संस्कारधन-पू.भद्रगुप्तविजयजी म.सा.
अनुवाद सहायक-पू.सा.श्री अनंतनिधिश्रीजी म.सा.
...शाह

महाराष्ट्र

बोरिवली-कांदिवली-मीरारोड आदि	
भावनाबेन	98193 17766
मुलुंड-भांडुप-विक्रोली आदि	
अमितभाई गांधी	98672 12848
विवेकभाई	98199 71556
घाटकोपर - रुपेशभाई	93222 31001
वालकेश्वर-भाविकभाई	98211 66679
माटुंगा-तुषारभाई	98202 35992
गोरेगाम - पींकीबेन	99695 45565
चोपाटी - मुकेशभाई	93222 78552
मलाड-अनिलभाई	88501 21255
भायंदर-सचीनभाई	99875 41944
भायखला-रसीलाबेन	93211 04850
नवजीवन-नितिनभाई	98331 22175
कल्याण-मोहनभाई	98204 75515
भिवंडी-अतुलभाई	9890769493
डोम्बीवली-धनेशभाई	93225 66437
नासिक-राकेशभाई	97300 11110
नंदुरबार-आकाश जैन	87805 15309

गुजरात

अमदावाद-परेशभाई	93749 52660
आणंद-नीतीनभाई	98250 30825
बरोडा-कृतार्थभाई	93749 93060
बरोडा-आकाशभाई	94274 60140
बरोडा-सपनभाई	99243 65161
नवसारी-वलसाड-बारडोली आदि	
जनकभाई सर	95372 71201
हिंमतनगर-हार्दिकभाई	9898689591
महेसाणा-भाविनभाई	98792 18081
उंझा-हेमाबेन	98250 67204
जामनगर-निशीथभाई	94299 41554

सुरत

निकेशभाई	96629 84685
मार्गेशभाई	90999 25330
हिरलभाई	99794 22629
कतारगाम- पारस शाह	81281 45044
अडाजण-पाल	
भावेशभाई	96622 98800
डभोई-सौरीनभाई	97250 04267

पूना

श्रीपालभाई	96652 32226
दिनेशभाई	98226 27476
विकेशभाई	98234 45704
अशोकभाई	98900 49333
अमितभाई	98229 64843
मयुरभाई	94219 02989
महावीरभाई	72768 89363

मध्यप्रदेश रतलाम-इंदोर-उज्जैन आदि

श्री नवकार परिवार	
अमित मुणत	98272 75740
राजगढ शुभम्	97556 85883

प्रतापगढ (राज.)

नुपुलभाई जैन	94130 47032

बेंग्लोर-चेन्नाई एवं समग्र दक्षिण भारत

लवीशभाई	97234 00447

यदि आप भी बालसाहित्य भेजना चाहते हो तो पूर्णानंद प्रकाशन के पते पर भेजे। आप के नाम से मेगेझीन मे उचित जगह पर प्रकाशित किया जायेगा।

स्तुति / Prayer

प्यारे बच्चों !

आप रोज मंदिर जाते हो तो रोज प्रभु के सामने ये सभी स्तुति बोलना है, बोलते समय बहुत आनंद आएगा।

जे दृष्टि प्रभु दर्शन करे ते दृष्टि ने पण धन्य छे,
जे जीभ जिनवर ने स्तवे, ते जीभ ने पण धन्य छे,
पिये मुदा वाणी सुधा, ते कर्ण युग ने धन्य छे,
तुज नाम मंत्र विशद धरे, ते हृदय ने पण धन्य छे! 1

हे देव तारा दिलमां वात्सल्यना झरणा भर्या,
हे नाथ! तारा नयन मां करुणा तणां अमृत भर्या,
वीतराग तारी मीठी मीठी वाणीमां जादू भर्या
तेथी ज तारा चरणमां बालक बनी आवी चढ्या! 2

सागर दयाना छो तमे, करुणा तणा भंडार छो,
अम पतितोने तारनारा, विश्वना आधार छो,
तारे भरोसे जीवन नैया, आज में तरती मुकी,
लाख लाख वंदन करुं, जिनराज तुम चरणे झुकी! 3

Dear Children !

When you go to the temple, speak these prayers in front of God, and while doing so you will feel happiness.

Je drashti prabhu darshan kare, te drashti ne pan dhanya chhe,
Je jibh jinvarne stave, te jibh ne pan dhanya chhe,
Piye muda vani sudha, te karna yug ne dhanya chhe,
Tujh nam mantra vishad dhare, te hraday ne pan dhanya chhe ! 1

Hay dev tara dilma vatsaly na jharna bharya,
Hay nath tara nayanma karuna tana amrit bharya,
Vitrag taree mithi mithi vani ma jadu bharya,
Tethi j tara charan ma balak bani aavi chadhya ! 2

Sagar daya na chho tame, karuna tana bhandar chho
Aam patito ne taranara vishwa na aadhar chho,
Tare bharose jivan naiya, aaj mein tarti muki,
Lakh lakh vandan karu jinraj tum charane jhooki ! 3

इतना निकालो / Expel These

प्यारे बच्चों...		Dear children...
क्रोध रूपी कचरा निकालो,		Expel the garbage of **anger**,
मान का मैल निकालो,		Expel the dirt of **Proudness**,
माया की मूर्खता निकालो,		Expel the Stupidity of **Fraud (Maya)**,
लोभ का लालच निकालो,		Expel the **Greediness**,
इन्हें रोजाना निकालो!		**Expel these every day!**
क्षमा से क्रोध जाता है।		**Forgiveness** removes anger.
नम्रता से मान जाता है।		**Politeness** removes Proud.
सरलता से माया जाती है।		**Simplicity** removes Fraud attitude (Maya).
दान से लोभ जाता है।		**Donation** removes Greediness.
क्रोध से शत्रुता बढ़ती है,		**Anger** increases enimity,
क्षमा से शत्रुता घटती है।		**Forgiveness** decreases enimity.
मान से विनय जाता है,		**Proudness** takes away humbleness,
नम्रता से गुणी बना जाता है।		**Politeness** makes us rich in positive qualities.
माया से अशांत बनते हैं,		**Fraud** attitude(Maya) makes us restless,
सरलता से शांत होते हैं।		**Straight forwardness** gives us peace.
लोभ से पाप बढ़ता है,		**Greediness** leads to sin,
दान से पाप घटता है।		**Donation** decreases sin.

चतुर अभयकुमार - चोर - २

(गतांक से आगे)

श्रेणिक महाराजा के पुत्र और राजगृही के महामंत्री अभयकुमार ने चोर को पकड़कर महाराजा श्रेणिक के सामने पेश किया। चोर को देखते ही राजा क्रोधित हो उठे, क्योंकि चांडाल का हाथ केरी के वृक्ष पर लगने से 6 ऋतु के फल-फूल से विकसित राज बगीचे में धीरे-धीरे देव का प्रभाव घटने लगा था, अतः गुस्से में राजा ने चोर को मृत्यु दंड का आदेश दे दिया। मरने का डर सभी को होता है। चांडाल ने भी रोते-रोते राजा से सजा माफ करने की बहुत प्रार्थना की, परन्तु राजा का दिल नहीं पिघला । तब उसने अभय कुमार से प्रार्थना की कि, आप मुझे सजा से मुक्त कराइए। इस तरह बार-बार की विनती से दयालु अभयकुमार ने सोचा - **शरण में आये हुए की रक्षा करना क्षत्रिय का धर्म है तथा बुरे व्यक्ति को भी सुधरने का एक मौका अवश्य देना चाहिए।** ऐसा विचार करके अभयकुमार ने कहा, एक उपाय है - यदि तू तेरी आकर्षणी विद्या राजा को सीखा दे तो तेरी सजा टल सकती है। चांडाल ने जान बचाने के लिए हाँ कर दी।

अब अभयकुमार ने राजा से कहा - पिताजी! इसकी विद्या इसके मरने के साथ ही नष्ट हो जायेगी। वह विद्या आप सीख लो। इसे सजा बाद में दे देना। इस विद्या से अनेक राजाओं को भी जीता जा सकता है।

अभय कुमार की बात राजा को पसंद आ गई। उन्होंने चांडाल से कहा, "तू मुझे तेरी विद्या सीखा दे"। तब चांडाल बोला, मेरी विद्या मंत्र याद रखने से सिद्ध हो जायेगी।

तत्पश्चात् चांडाल वह विद्या राजा को सिखाता है परन्तु राजा को याद नहीं होती है। बार-बार भूल जाते हैं । तब अभयकुमार बोले - पिताजी ऐसे तो 100 बार सुनने से भी याद रहने वाली नहीं, क्योंकि विनय बिना विद्या मिलती नहीं, **विद्या विनय से शोभती है**। आप तो सिंहासन पर बैठे हो और विद्या देने वाला सामने खड़ा है तो मंत्र कैसे याद होगा? विद्या दाता को सिंहासन पर बैठाओ और आप दोनों हाथ जोड़कर सामने खड़े रहो तो ही विद्या आयेगी। राजा ने वैसा ही किया और चमत्कार हुआ। एक बार में सब याद हो गया।

विद्या मिल गई तो राजा बोले- अब इसे फांसी पर चढ़ा दो। अभयकुमार तुरन्त बोले- पिताजी! चोर ने तो आपको विद्या दान दिया है और इस नाते वो आपके विद्या गुरू बन चुके हैं। गुरू को सजा नहीं, दक्षिणा दी जाती है। इसे दक्षिणा में अभय दान दो। राजा ने चांडाल को ढेर सारा धन देकर मुक्त कर दिया ।

इस तरह अभयकुमार ने चोर पकड़ भी लिया और छुड़वा भी दिया।

(पूर्ण)

⇨ बोध : प्यारे बच्चों

- **अपनी बुद्धि का इस्तेमाल दूसरे दुःखी जीवों की आपत्ति को दूर करने में कीजिए।**
- **गुरू के विनय से विद्या जल्दी आती है। कम मेहनत में होशियार बनना हो तो गुरू और बड़ों का विनय अवश्य कीजिए।**

Intelligent Abhay kumar-2

(Continued from previous part)

King Shrenik's son and the Minister of Rajgrahi, Abhaykumar had caught the thief and had brought him in front of the king. On seeing the thief... king became angry because the garden's heavenly powers were decreasing slowly as it was touched by a low cast person. Hence, he gave him punishment of death. Everyone fears from death. The thief also begged for mercy but the king was so angry that he didn't listen to him. Now the thief requested Abhaykumar - please save me from this punishment. Because of repeated request of the thief, Abhaykumar thought - **it is the duty of a kshatriya to help a person who seeks his mercy and everyone should get a chance to change.** Thus he said - there is one way, if you pass on your knowledge to the king, your death sentence can be delayed for some time. The thief said "okay", to save his life.

Now Abhaykumar told the king - father ! that thief's knowledge will be destroyed with his death. I think you should learn it from him, you can hang him later. You can win many kingdoms using this knowledge.

The king liked his son's suggestion. He told the thief - I want you to teach me your knowledge. The thief said - My knowledge will be acquired by remembering the mantra

Then the thief teaches him the mantra but the king is not able to remember it. He forgets it every time. Then Abhaykumar said - Father! you wouldn't be able to learn it even if you hear it a 100 times. **Without modesty one cannot learn anything. Modesty beautifies knowledge.** You are sitting on a throne and your teacher is standing in front of you, how would you learn the mantra ? I think you should make your teacher sit on the throne, and you should stand in front of him, then you will surely be able to remember the mantra. The knowledge will surely pass on. The king did as told and a miracle happened. He learnt the mantra in a go.

However, as soon as he gained the knowledge, he said - Now you must die. Abhaykumar instantly said - father ! the thief has taught you something, which makes him your teacher. A teacher is not given a punishment, he is given a reward. You should give him the reward of forgiveness. The king gave him a huge amount of wealth and set him free.

In this way Abhaykumar caught the thief and also set him free.

(End)

⇨ **Moral : Dear children !**

- **You should use your intelligence to help others.**
- **If the teacher is respected, only then the student can acquire the knowledge. If you want to gain knowledge without much hard work, you must pay respect to your teachers and elders.**

संप्रति महाराजा

एक भिखारी खाने के लिए घर-घर भीख मांगता हुआ घुमता है। परंतु दुर्भाग्यवश उसे कहीं भी कुछ नहीं मिला। इसी दौरान उसकी नजर एक साधु महाराज पर पड़ी। श्रावक उन्हें बेहद आग्रहपूर्वक आहार वेहरा रहे थे। इस दृश्य को देखकर उसने खाने के लक्ष्य से पू. आर्यसुहस्ति सूरिजी म.सा. के पास दीक्षा ग्रहण की। और केवल एक दिन दीक्षा का पालन किया। रात्रि में अचानक पीड़ा होने लगी। सभी साधु एवं श्रावक उनकी सेवा में लग गए। तब संयम की अनुमोदना करते हुए कालधर्म (मृत्यु) को प्राप्त हुए। महज एक दिन की दीक्षा के प्रभाव से संप्रति महाराजा बने। पू. आर्यसुहस्ति सूरिजी के दर्शन से उन्हें जाति-स्मरण ज्ञान हुआ तथा जैन धर्मी बने। आइये उन्हीं संप्रति महाराजा के शासन-प्रभावक जीवन पर एक नजर डालें।

संप्रति महाराजा अनेक क्षेत्रों पर विजय हासिल कर अपनी राजधानी उज्जैनी पधारे। नगरजनों ने उनका शानदार प्रवेश करवाया। संप्रति महाराजा ने आकर माता कमलादेवी के चरणों में प्रणाम किया। परन्तु माता का शोकमग्न चेहरा देखकर हतप्रभ रह गए। खुद भी चिंतामग्न हो गए।

कहा गया है कि माता के दुःख से जो दुःखी हो वो ही सुपुत्र है अन्यथा माता के दुःख में सुखी पुत्र तो पशु जैसा ही समझना।

संप्रति पूछते हैं - माँ! आज मेरी जीत से सारे नगर में आनंदभरा माहौल है पर आप क्यों उदास हैं? आपके पुत्र की विजय से सारे नगरजन हर्षित हैं। परन्तु यदि आप दुःखी हैं तो मेरे लिए ये विजय कोई मायने नहीं रखती। यह माता तो परम श्रद्धालु श्राविका थी। दुनिया से निराली थी । **दुनिया तो पुत्र के शरीर को देखती है परन्तु माता की निगाहें तो सदा ही पुत्र की आत्मा पर होती है।**

माता ने कहा - बेटा! जो राज्य तुझे नरक में ले जाएगा, तुझे पापों में डुबाएगा, तेरे दुःखों मे इजाफा करेगा ऐसे राज्य की उपलब्धि से सच्ची माता को खुशी कैसे होगी? संप्रति कहते हैं - माता आपकी खुशी में ही मेरी खुशी है। आप कहो - आपकी खुशी किसमें है?

माता बोली, बेटा ! तूने जिस धरती पर जीत हासिल की है उस संपूर्ण धरा को जिनालयों से सुशोभित कर दे। तेरी संपत्ति से हर नगर-गाँव की धरती को जिन मंदिर रूपी तिलक से सजा दे। तभी मुझे आनन्द प्राप्त होगा। मातृ भक्त संप्रति राजा ने तत्काल ही संपूर्ण धरा को जिनमंदिरों से सुशोभित करने का निर्णय ले लिया। महाराजा ने ज्योतिषियों को बुलाकर स्वयं का आयुष्य पूछा, जवाब मिला 100 वर्ष (36000 दिन) आयुष्य शेष है। संप्रति ने तब एक महान संकल्प लिया- प्रतिदिन एक मंदिर के खातमुहूर्त होने के समाचार सुनने के बाद माता को नमस्कार करके ही भोजन करना। माता भी रोज हर्ष से पुत्र के कपाल पर मंगल तिलक करती थी।

इस प्रकार उन्होंने 36000 नवीन जिनालय और 89 हजार जिन-मंदिरों का जीर्णोद्धार करवाया। इस तरह कुल सवा लाख जिनालय बनवाए और सवा करोड़ जिन प्रतिमाएं भरवाई। इसके अलावा दीन-दुःखी जीवों की भलाई के लिए 700 दानशालाएं भी शुरु की। ऐसे संप्रति महाराज की जय हो ! विजय हो ! जय जयकार हो !

⇨ **बोध : प्यारे बच्चों .....**

- **भिखारी के भव में संयम की अनुमोदना (प्रशंसा) से राजघराने में जन्म हुआ। आप भी धर्म की भरपूर प्रशंसा करना।**
- **संप्रति महाराज के समान प्रतिदिन माँ के चरणों में प्रणाम करना।**
- **माँ के वचन का हमेशा पालन करना।**
- **संप्रति महाराज ने सवा करोड़ प्रतिमा भरवाई थी। हम भी कम से कम प्रतिदिन दर्शन-पूजन का संकल्प अवश्य करें।**

King Samprati

Once there was a beggar roaming in search of food. But unfortunately he did not get anything anywhere. Then he saw a sage(muni). A man was offering food to him with great respect. Seeing this, he accepted 'Diksha' from Pujya Aryasuhasti suri Maharaj Sa, with the intention of getting food, but he could follow 'Diksha for one day only. Suddenly at night he experienced some severe pain. All sages were trying to help him out of it. But, he died (Kaldharma) praiseing (anumodana) Diksha.

Even one day's Diksha, made him King Samprati. He saw Pujya Aryasuhasti suriji and could remember his previous life and therefore opted for Jainism. Come let's have a look at King Samprati's life.

King Samprati had conquered half of Bharat and then returned to his home territory, Ujjaini. The citizens gave him a great welcome. On reaching the palace, King Samprati touched his mother Kamladevi's feet seeking her blessings. But, on seeing his mother's sad face he became restless. He also became anxious.

It is said that, **"The son who is sad because his mother is sad is the real son, otherwise that son who is happy in his mother's sadness should be considered an animal"**

Samprati asks - **"Mother! today, everyone is celebrating my victory in the city, but why are you sad ? Everyone is happy in your son's victory, but if you aren't happy this victory is meaningless for me."**

This mother was very devoted for the religion. She was a different kind of mother. The world looks at the body of the son, but mother always looks at his soul.

The mother said - Son ! This kingdom will take you to hell; it will lead you to sins. How can a mother be happy if her son wins such a kingdom? Then Samprati says - My happiness lies in your happiness. Tell me, what makes you happy.

The mother says - Son! the area that you have just won, make it more beautiful by constructing Jain temples on it. Use your wealth to beautify your whole Kingdom with Jain temples in every city and village, only then I will be happy. Instantly, mother-devoted Samprati made up his mind to make Jain temples all across the earth. The king called an astrologer and asked him how long will he live ? The astrologer answered - 100 years (36000 days) are still remaining in your life. Then Samprati took a great pledge - Every day unless he hears that one temple is going to be constructed and receives his mother's blessings, he won't take food.

This way he constructed 36 thousand new Jain temples and reconstructed 89 thousand Jain temples. In total he constructed one and a quarter lakh new temples and 1.25 crores Jain idols. Apart from this, he started 700 charity homes for the poor and needy. What a great king Samprati ! What a great his life !!

⇨ **Moral: Dear Children !**

- ◉ **A little devotion and praise for Diksha (sanyam) made a beggar take birth in a royal family. You should also praise religion from your heart.**
- ◉ **Like King Samprati, you should respect your mother and take her blessings every day. Always obey your mother.**
- ◉ **King Samprati made 1. 25 crore idols. We should at least visit the temple every day and worship god religiously.**

तत्व जानकर जैन बनो

(1) मतिज्ञान के कितने भेद है ?

अ. 25 ब. 27 क. 28 ड. 21

(2) चारित्र के प्रभाव से भिखारी कौनसा राजा बना ?

अ. कुमारपाल महाराजा ब. श्रेणिक महाराजा
क. संप्रति महाराजा ड. अकबर महाराजा

(3) अकबर महाराज को पू.आ. श्री हीरसूरिजी म.सा. से मिलाने वाली कौन सी श्राविका थी ?

अ. सुलसा ब. चंदनबाला क. चंपा ड. रेवती

(4) कौनसी पूजा से ज्ञानावरणीय कर्म का क्षय होता है ?

अ. ज्ञान पूजा ब. चंदन पूजा क. धूप पूजा ड. दीपक पूजा

(5) लगातार तीस उपवास का तप क्या कहलाता है ?

अ. छट्ठ ब. मासक्षमण क. मोक्षदंड ड. अट्ठाई

(6) अनंत लब्धि निधान पू. गौतमस्वामीजी हंमेशा कौनसा तप करते थे ?

अ. नित्य एकासना ब. नित्य आयंबिल
क. छट्ठ के पारणे छट्ठ ड. अट्ठम के पारणे अट्ठम

(7) श्री अरिहंत भगवान सामान्यतया कितनी मुष्टी लोच करते हैं ?

अ. चार ब. पांच क. दो ड. छः

(8) ग्यारह साल की उम्र में कौनसे गुरुभगवंत को आचार्यपदवी मिली थी ?

अ. पू. आ. श्री हेमचंद्रसूरि म. ब. पू. आ. श्री बप्पभट्टसूरि म.
क. पू. आ. श्री सेनसूरि म. ड. पू. आ. श्री हीरसूरि म.

(9) कार्तिक सुदी पांचम कौनसी आराधना का दिन है ?

अ. दर्शन ब. ज्ञान क. चारित्र ड. तप

(10) ऋषभदेव भगवान ने कितनों के साथ निर्वाण पाया ?

अ. 105 ब. 107 क. 1008 ड. 100

(11) नयसार के भव में कौन से भगवान को सम्यक्त्व की प्राप्ति हुई ?

अ. श्री आदिनाथजी ब. श्री शांतिनाथजी
क. श्री नेमनाथजी ड. श्री महावीरस्वामीजी

(12) 35 गुणों से युक्त वाणी किसकी है ?

अ. अरिहंत क. सिद्ध ब. आचार्य ड. उपाध्याय

तत्व जानकर जैन बनो के उत्तर
1. क, 2. क, 3. क, 4. अ, 5. ब, 6. क,
7. ब, 8. ब, 9. ब., 10. ब, 11. ड, 12. अ

Learn Elements to become Jain

1. **How many types of Mati Gyan are there?**
   a. 25 b. 27 c. 28 d. 21
2. **What did beggar become due to the effect of Charitra?**
   a. Kumarpal Maharaja b. Shrenik Maharaja
   c. Samprati Maharaja d. Akbar Maharaja
3. **Which shravika helped Akbar to meet pujya Aacharya Hirsuriji Maharaj Saheb ?**
   a. Sulsa b. Chandanbala c. Champa d. Revti
4. **Which puja overcomes Gyanavarniya Karma?**
   a. Gyan Puja b. Chandan Puja c. Dhup Puja d. Deepak Puja
5. **What is 30 days of fasting called ?**
   a. Chhath b. Maskhaman c. Mokshdand d. Atthai
6. **Which taap did Gautamswami used to do always ?**
   a. Ekaasana b. Aayambil
   c. Chhath after chhath d. Attham after attham
7. **Arihant Bhagwan normally does-**
   a. Four mushti 'Loch' b. Five mushti 'Loch'
   c. Two mushti 'Loch' d. Six mushti 'Loch'
8. **Who got the title of Aacharya at the age of 11 ?**
   a. Hemchandra suri maharaja b. Bappabhatta suri maharaja
   c. Sen suri maharaja d. Hir suri maharaja
9. **What is worshipped on the day of Kartik sudi paancham (5) ?**
   a. Darshan b. Gyan c. Charitra d. Taap
10. **God Rishabhdev obtained Nirvan along with how many people?**
    a. 105 b. 107 c. 1008 d. 100
11. **Who got Samyak Darshan in the bhav (life) of Naysar ?**
    a. Aadinath Ji b. Shantinath Ji
    c. Nemnath Ji d. Mahavir swami Ji
12. **Whose voice is blessed with 35 qualities ?**
    a. Arihant b. Siddha c. Aacharya d. Upadhyay

Learn elements to become Jain - Answers

1. c, 2. c, 3. c, 4. a, 5. b, 6. c,
7. b, 8. b, 9. b, 10. b, 11. d, 12 a.

खीर का दान

एक नन्हा सा बालक था, जिसका नाम था संगम। ग्वाले के घर पर उसका जन्म हुआ था। बचपन में ही पिता गुजर चुके थे। माता आस-पास के घरों में काम-काज कर जैसे-तैसे दो जून का भोजन जुटा पाती थी। एक बार किसी त्योहार के दिन सभी बच्चों ने खीर का भोजन किया। यह देखकर संगम के मन में भी खीर खाने की इच्छा जाग उठी। पूर्व जन्मों के अशुभ कर्मों की वजह से सूखी रोटी भी उसे मुश्किल से नसीब होती थी, खीर तो जैसे उसके लिए स्वप्न मात्र थी। उसने माँ के सामने इच्छा प्रगट की, किन्तु माता लाचार थी। उसके पास खीर का सामान खरीदने जितने पैसे नहीं थे। माँ के इंकार करने पर नादान संगम जिद करते हुए जोर-जोर से रोने लगा। उसके रोने की आवाज सुनकर पड़ोसन बहनें इकठ्ठी हो गईं। उन्होंने दया भाव से दूध, चावल, शक्कर आदि वस्तुएं दे दी। तब माँ ने खीर बनाकर थाली में डाल दी। 'अभी गरम है, ठंडी हो जाये फिर खाना', यह कहकर माँ पानी भरने कुएँ पर चली गई। बालक अत्यंत खुश होकर खीर को ठंडी करने का यत्न करता है। इत्तफाक से उसी समय एक तपस्वी मुनि वहाँ से गुजरे। संगम उन्हें आदरपूर्वक घर पर बुलाकर खीर का लाभ देने की प्रार्थना करता है। प्रसन्नतापूर्वक सारी खीर मुनिराज को वहोरा देता है। जिन्दगी में पहली बार जो खीर मिली थी, जिसे रो रो कर हासिल किया था उसी को दान दे दिया; **'थोड़ी मेरे लिए बचा लूं' ऐसा एक पल भी नहीं सोचा।**

उत्कृष्ट भाव से किए हुए दान से बालक बेजोड़ पुण्य का बंध करता है।

माँ पानी भरकर वापिस लौटती है। देखती है कि बेटा थाली चाट रहा है। देखकर माँ के मन में विचार आया - मेरा बेटा कितना भूखा है। छोटे से बालक में भी कमाल की गंभीरता थी। मुनिराज को वहोराने का जिक्र तक माँ के समक्ष नहीं किया। रात में अशाता वेदनीय कर्म का उदय हुआ। अतिशय पीड़ा के बावजूद भी दान की अनुमोदना करते हुए समतापूर्वक मरण को प्राप्त करता है तथा गोभद्र सेठ एवं भद्रा सेठानी के घर पर शालिभद्र के रूप में उत्पन्न होता है। गत जन्म के पुण्य के प्रभाव से वस्त्र-आभूषण-पकवानों की 99 पेटियाँ प्रतिदिन देवलोक से उतरती हैं। इस बेशुमार समृद्धि-संपत्ति को भी त्याग कर शालिभद्र, वीर प्रभु के पास संयम ग्रहण कर आत्मा का उद्धार करते हैं।

⇨ बोध : प्यारे बच्चों .....

◎ शुद्ध भाव से किया हुआ धर्म महान फल दायी होता है।

◎ जिस प्रकार भोजन के बाद पानी आवश्यक है, उसी प्रकार से धर्म कार्य करने के बाद उसकी अनुमोदना अवश्य कीजिए।

Kheer Endowment

Once there was a small boy named Sangam. He was born in the family of Herdsman. His father passed away in his childhood. His mother was working very hard at nearby houses to manage food for her family somehow. On some festive day all the kids nearby had kheer in their lunch. Seeing those kids eating delicious kheer, Sangam also desired the same but unfortunately because of some bad deeds of past births it was really difficult for him to get bread for his livehood, so getting kheer was out of question. Although he expressed his desire to have kheer in front of his mother, but she was helpless. She couldn't even afford raw materials required to prepare kheer. The little Sangam started crying for kheer. Hearing his cry all the the neighborhood ladies gathered. After hearing the reason they mercily offered them some raw material to prepare kheer. Happily Sangam's mother cooked delicious kheer for Sangam. It was too hot. "please wait till it gets a bit cold", saying this the mother went to bring water for the house from well. Sangam was extremely happy and was trying to cool down the kheer quickly. Coincidently during that time a saint was passing by. Sangam very respectfully offered him the kheer and happily gave enitre kheer to the saint with a smile on his face, that kheer which for the first time in his life,he was able to see for which he cried a lot, was offered to the saint by him. **"I should save some for myself", he didn't even think like this. Due to this excellent deed (daan), he acquired very high punya.** Mother came back from the well after finishing her work and saw the kid licking the utensil. Mother thought that Sangam was very hungry. Although he was a kid, but he acted very maturely : even after offering his favorite kheer to the saint, he didn't tell about this to his mother. In the night, due to some previous Ashata vedaniya karma, he experienced extreme pain, but despite of extreme pain, he achieved "Samtapurvak maran"● and then in next life took birth as shalibhadra in the house of Gobhadra seth and Bhadra sethani. There he had more than enough jewellery, clothes, food etc. Everyday he used to receive 99 boxes of all these from heaven. Even after having all this luxury in life he left everything and went to Lord Shree Mahavir Swami, accepted 'Diksha' and elevated his soul.

⇨ **Moral : Dear Children !**

- **Religion done with pure feelings and deeds gives excellent fruits.**
- **Just as the way water is necessary after the meals, we should in the same way do appreciation (Anumodna) after doing any religion related work.**

● Samptpurvak maran = death full of patience

समवसरण

प्यारे बच्चो .....

आओ! देखें परमात्मा के समवसरण का स्वरूप...

1. अरिहंत भगवान समवसरण में देशना देते हैं।
2. उसमें तीन गढ़ (मंजिल) होते हैं।
3. नीचे पहला गढ़ चाँदी का होता है।
4. दूसरा गढ़ सोने का होता है।
5. तीसरा गढ़ रत्नों का होता है।
6. पहले गढ़ में आए हुए देवताओं के विमान रहते हैं।
7. दूसरे गढ़ में जिनवाणी सुनने आए हुए पशु-पक्षियों की व्यवस्था होती है।
8. तीसरे गढ़ में देव और मानवों की व्यवस्था होती है।
9. तीसरे गढ़ में प्रभु से 12 गुना ऊँचा अशोक वृक्ष होता है।
10. अशोक वृक्ष के नीचे स्वर्ण का सिंहासन होता है।
11. स्वर्ण सिंहासन के ऊपर प्रभु देशना देने के लिए बैठते हैं।
12. रत्न जड़ित पाद-पीठ के ऊपर प्रभु पैर रखते हैं।
13. प्रभु के आस-पास देवता चामर ढालते हैं।
14. प्रभु के मस्तक के पीछे सूर्य से भी तेजस्वी भामण्डल होता है।
15. प्रभु के मस्तक के ऊपर गोलाकार तीन छत्र होते हैं।
16. आकाश में से देवता सुगंधित पुष्पों की वृष्टि करते हैं।
17. प्रभु की देशना प्रारंभ होने से पहले सबको समाचार पहुँचाने के लिये आकाश में से देवता देव दुंदुभी-नगाड़े बजाकर घोषणा करते हैं।
18. प्रभु मालकौंस राग में देशना देते हैं।
19. देव वाजिंत्र मंडली प्रभु की देशना में संगीत का सुर भरने के लिये आकाश में दिव्य ध्वनि करती है।
20. पूर्व दिशा की ओर बैठकर अरिहंत प्रभु देशना देते हैं।
21. समवसरण के पश्चिम, उत्तर, दक्षिण दिशा में देवता रचित प्रभु बिंब अर्थात् प्रतिमा होती है, वे साक्षात् प्रभु के समान ही दिखाई देती हैं।
22. प्रभु की देशना सुनने आए जन्मजात बैरी पशु-पक्षी (चूहा-बिल्ली, मोर-सांप वगैरह) भी अपने बैर भूलाकर शांत हो जाते हैं।
23. तीसरे गढ़ में देव और मानवों की कुल बारह पर्षदाएं होती हैं।
24. प्रभु की देशना 1 योजन (12 कि.मी.) तक एक समान सुनाई देती है।
25. प्रभु की देशना सबको अपनी-अपनी भाषा में सुनाई देती है।
26. प्रभु की देशना में सबको ऐसा लगता है कि प्रभु मेरी ही भाषा में मेरी शंका का समाधान कर रहे हैं।
27. प्रभु की वैराग्यमय देशना सुनकर बड़े-बड़े राजा महाराजा भी वहीं पर दीक्षा ले लेते हैं।

(पेज नंबर 17 देखें)

Samavasarana

Dear Children !

Let us see how Arihant bhagvan's Samavasarana looks like.

1. Lord Arihant gives Deshna in Samavasarana.
2. There are three enclaves or (preaching) floors in the Samavasarana.
3. First floor (gadh) is made up of silver.
4. The second floor is made up of gold.
5. The third floor is made up of gems.
6. First floor is meant for parking of Dev vimaan.
7. Second floor is meant for animals and birds.
8. Third floor is meant for devata and humans.
9. At the center of third floor an Ashoka tree is situated which is heighted 12 times the Arihant Bhagwan's height.
10. Golden throne is kept under Ashoka tree.
11. God (Prabhu) seats on throne and gives Deshna.
12. Prabhu keeps his legs on the plate made up of gems.
13. In left and right sides of the Lord, Devata waves Chamar.
14. There is Bhamandal behind the head of Prabhu (Lord), which shines brighter than sun.
15. There are three round shaped chhatra, over the head of Prabhu.
16. Devata shower the flowers from the sky.
17. Devata produce sound by Nagada and dev dundubhi from the sky, to inform that Prabhu's Deshna is going to start.
18. Prabhu gives deshna in malkonsa raaga.
19. Dev Vajintra group plays musical instruments in the sky to add melody to Prabhu's Deshna.
20. Prabhu gives deshna facing the east direction.
21. In west, north and south direction devata create replica of Prabhu.
22. At the time of deshna the animals - birds which are inherent enemies (mouse - cat, peacock - snake etc.) maintain silence in samavasarana and do not fight with each other.
23. In the third floor there are 12 Parshada of devata and human.
24. Prabhu's deshna is equally heard up to 12 k.m.
25. Every one hears deshna in his/her own language.
26. When Prabhu gives deshna everyone feels as if Prabhu is solving my doubt in my own language.
27. Listening to Prabhu's deshna many kings and emperors accept diksha, there only.

(Refer page no. 17)

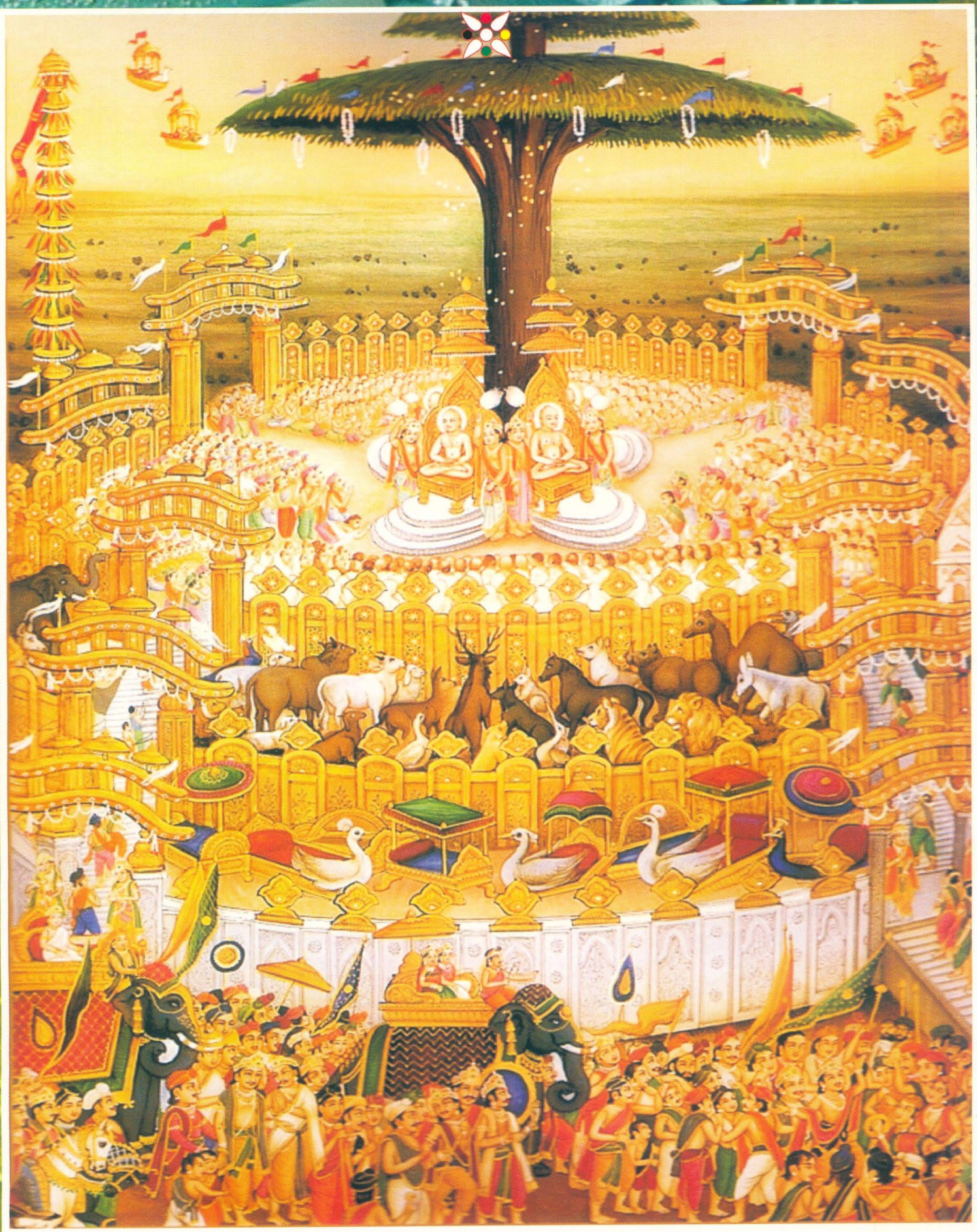

समवसरण

Samavasarana

प्यारे बच्चो !

हमने किये गलत काम की सजा क्या मिलेगी जरा ध्यान से देखे। दु:खो से बचना है तो पाप कार्य करना छोड़ दें। नही तो पापो की मजा और नरक की सजा।

चुगली / निंदा करना
Criticizing others slandering, back biting

आलस्य (प्रमाद) में रहना
Laziness & indolence

चोरी करना
stealing

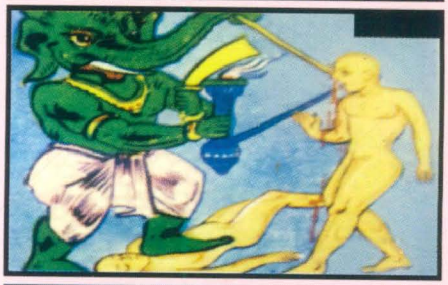

किसी भी जीव को मारना
Killing any animals

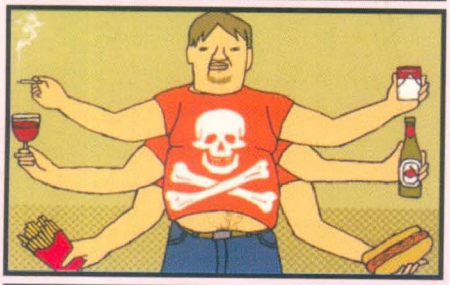

नशा/जुआ व्यसन करना
Adiction ambling & other vices

हँसी उड़ा कर बैर बांधना
By poking fun at others antagonizes them

Dear Children !

carefully see the punishment for our sin. You beware commuting sins to avoid such evil punishment.

बड़ो से अभद्र व्यवहार
Misbehave with parents

टी.वी. देखना
Watching T.V.

पानी में तैरना
Swimming in water

क्लब-होटल-नाईट पार्टी
Club-Hotel-Night party

आईसक्रीम - ठंडा पीना
Eating ice-crem or Drinking cold water and cold drinks

बाजारु अभक्ष्य खाना
Eating Abhakshya Food / outside Food

exoteric.roach.org

अरिहंत भगवान के अष्टप्रतिहार्य Ashta pratiharya

अरिहंत भगवान के आश्चर्यकारी प्रभाव

प्यारे बच्चों !

1. प्रभु जब विहार करते हैं तब सब वृक्ष झुककर नमन करते हैं।
2. कांटे उल्टे हो जाते हैं।
3. पक्षी प्रदक्षिणा देते हैं।
4. आठ प्रातिहार्य आकाश में साथ में चलते हैं।
5. देवता नौ स्वर्ण कमल की रचना करते हैं, उनके ऊपर प्रभु चलते हैं। प्रभु केवलज्ञान होने के बाद कभी जमीन पर पैर नहीं रखते, क्योंकि जहाँ पैर रखते हैं वहाँ नौ स्वर्ण कमल एक के बाद एक आ जाते हैं।
6. प्रभु की दाढ़ी, मूंछ, बाल, नाखून कभी नहीं बढ़ते हैं।
7. कम से कम एक करोड़ देवता हमेशा रात-दिन प्रभु की सेवा में हाजिर रहते हैं।
8. प्रभु का रूप इतना सुंदर होता है कि इन्द्र जैसे इन्द्र भी प्रभु को देखते ही रह जाते हैं।
9. भगवान जहाँ भी जाते हैं वहाँ 125 योजन (1 योजन = 12 कि.मी.) तक किसी भी प्रकार की बीमारी किसी को नहीं होती है।
10. अतिवृष्टि (ज्यादा बारिश) नहीं होती है।
11. अनावृष्टि (बारिश नहीं होना, बारिश एकदम कम होना) नहीं होती है।
12. दुष्काल (बारिश नहीं होने से जल भंडार-तालाब-नदी का सूख जाना, अन्न-पानी का संकट खड़ा हो जाना आदि) नहीं होता है।
13. छह ऋतुएं एक साथ रहती हैं।
14. रोगी, निरोगी बन जाते हैं।
15. सूखे बाग-बगीचे फल-फूल से लद जाते हैं।
16. युद्ध वगैरह नहीं होते।
17. भूकंप, जल प्रलय आदि प्राकृतिक विपत्तियाँ नहीं आती हैं।
18. प्रभु के आगे धर्मचक्र सदैव चलता है।

◉ **परमात्मा को इतना सब क्यों मिला ?** इसलिए कि प्रभु ने पूर्व भव में सभी को संसार सागर से तारने की भावना (सवी जीव करूं शासन रसी) भायी थी।

◉ **यदि आपको भी भगवान बनना है तो** आज से सभी जीवों को अपने समान समझो और दुःखियों को देखकर हृदय में करूणा लाओ, किसी से द्वेष मत करो।

(पेज नंबर 20 देखे)

God Arihant's amazing effects

Dear Children !

1. During God's wandering (Vihar) the trees bow down to respect him.
2. Thorns get inverted.
3. Birds encircle around him.
4. Eight Pratiharyas go in the sky along with prabhu.
5. Heavenly Gods (Devata) make nine golden lotus over which god walks. After Keval gyan prabhu never puts his foot over land, because wherever god puts his foot, nine golden lotus come one after other.
6. Prabhu's moustache, beard, hair, nails, never grow.
7. At least 1 crore devata are always in the service of god day and night.
8. God's beauty is such that Indra keeps on looking towards him.
9. Wherever Prabhu goes, upto 125 Yojan nobody suffers from any disease. 1 Yojan = 12 KM.
10. There is no excess rain.
11. There is no drought.
12. There is no crisis of food and water.
13. All six seasons exist together.
14. Unhealthy become healthy.
15. Barren lands are flourished with flowers and fruits.
16. Battles do not take place.
17. Earthquake, Natural calamities like flood etc. do not occur.
18. Dharmachakra is always ahead of God.

- **Why does Arihant Bhagwan get all these ?** Because in previous births he wished to liberate each and every living being from this painful world, to make every living being the follower of Jain shasan.
- **If you also want to be like him,** consider all living beings similar to yourself and feel mercy for all, never hate anyone.

(Refer Page No. 20)

पहेली / Puzzle

प्यारे बच्चों !

नीचे तीर्थ के नाम, मूलनायक के नाम, लांछन, राज्य और 24 तीर्थंकरों में किस नंबर के, यह सब अपूर्ण दिया है। ठीक से सोचकर रिक्त स्थान को भरो।

क्र.	तीर्थ का नाम	मूलनायक भगवान का नाम	24 तीर्थंकरों में क्रम	लांछन	राज्य
1.	गिरनार	.....	22	.....	.....
2.	सम्मेद शिखर	.....	.....	सर्प	बिहार
3.	राणकपुर	.....	1	.....	.....
4.	चंपापुरी	वासुपूज्यस्वामी	.....	.....	बिहार
5.	हस्तिनापुर	.....	.....	.....	उत्तर प्रदेश
6.	भोपावर	.....	16	.....	.....
7.	नाकोड़ा	.....	23	.....	.....
8.	तारंगा	.....	.....	.....	गुजरात
9.	पावापुरी	.....	.....	.....	बिहार
10.	बलसाणा	.....	13	.....	महाराष्ट्र
11.	भोयणी	मल्लिनाथजी	.....	.....	.....
12.	राजगृही	.....	.....	कूर्म	बिहार

Dear Children !

Please fill in the blanks in the following table.

No.	Tirth name	Mulnayak (Main God)	Tirthankar No.	Lanchhan (symbol)	Rajya
1.	Girnar	----------	22	----------	--------
2.	Sammedshikhar	----------	--------	Snake	Bihar
3.	Ranakpur	----------	1	----------	--------
4.	Champapuri	Vasupujya Swami	--------	----------	Bihar
5.	Hastinapur	----------	--------	----------	U.P.
6.	Bhopavar	----------	16	----------	--------
7.	Nakoda	----------	23	----------	--------
8.	Taranga	----------	--------	----------	Gujarat
9.	Pavapuri	----------	--------	----------	Bihar
10.	Balsana	----------	13	----------	Maharashtra
11.	Bhoyani	Mallinathji	--------	----------	--------
12.	Rajgrahi	----------	--------	Tortoise	Bihar

प्यारे बच्चों...

किसको देखकर क्या बोलना...

मंदिर की ध्वजा देखकर	नमो जिणाणं
भगवान का मुख देखकर	नमो जिणाणं
सिद्ध अवस्था के गौतमस्वामी का मुख देखकर	नमो सिद्धाणं
गुरू भगवंत के दर्शन होने पर	मत्थएण वंदामि
माणीभद्रजी के दर्शन करने पर	प्रणाम
साधर्मिक के मिलने पर	प्रणाम
अन्यधर्मी के मिलने पर	जय जिनेन्द्र
रात्रि में म.सा. के दर्शन करने पर	त्रिकाल वंदना
तपस्वी के दर्शन होने पर	शाता में हो ?
कोई गलती होने पर	मिच्छामि दुक्कडं

परमात्मा के सम्मुख करने की प्रार्थना

हे परमात्मा.....

मैं हिंसक हूँ	मुझे अहिंसक बनाओ ।
मैं झूठा हूँ	मुझे सत्यनिष्ठ बनाओ ।
मैं कंजूस हूँ	मुझे उदार बनाओ ।
मैं कामी हूँ	मुझे ब्रह्मचारी बनाओ ।
मैं क्रोधी हूँ	मुझे क्षमाशील बनाओ ।
मैं मानी हूँ	मुझे विनयी बनाओ ।
मैं लोभी हूँ	मुझे संतोषी बनाओ ।
मैं रागी हूँ	मुझे वीतरागी बनाओ ।
मैं प्रमादी हूँ	मुझे अप्रमत्त बनाओ ।
मैं निष्ठुर हूँ	मुझे दयालु बनाओ ।
मैं लोभी हूँ	मुझे त्यागी बनाओ ।
मैं संसारी हूँ	मुझे सिद्ध बनाओ ।
मैं मायावी हूँ	मुझे सरल बनाओ ।
मैं परनिंदक हूँ	मुझे स्वनिंदक बनाओ ।
मैं कर्म से युक्त हूँ	मुझे दुर्गति से मुक्त बनाओ ।

Dear Children .....

What to say, when you...

On seeing temple's Dhvaja (flag)	Namo Jinanam
On seeing (darshan) God's face	Namo Jinanam
On seeing (darshan) Gautamswami's face (siddha state)	Namo Siddhanam
On seeing (darshan) Guru Bhagvant	Mathaen Vandami
On seeing (darshan) Manibhadraji	Pranam
On meeting a sadharmik (fellow Jain)	Pranam
On meeting a non-Jain	Jai Jinendra
On seeing (darshan) Maharaj Saheb in night	Trikal Vandana
On seeing (darshan) Tapasvi	Sata Mein ho?
On Doing some mistake	Michhami Dukkadam.

Prayers to be performed before God

Hey God !

I am violent	make me non-violent
I am liar	make me truthful
I am miser	make me generous
I am lascivious	make me brahmachari
I am short-tempered	make me forgiver
I am prideful	make me humble
I am greedy	make me placid (santoshi)
I am ragi	make me vitragi
I am lazy	make me 'apramatta'
I am brutal	make me kind
I am sansari	make me siddha
I am mayavi	make me straightforward
I am criticizer	make me self-criticizer
I am filled with karma	make me free from misery

वेदनीय कर्म

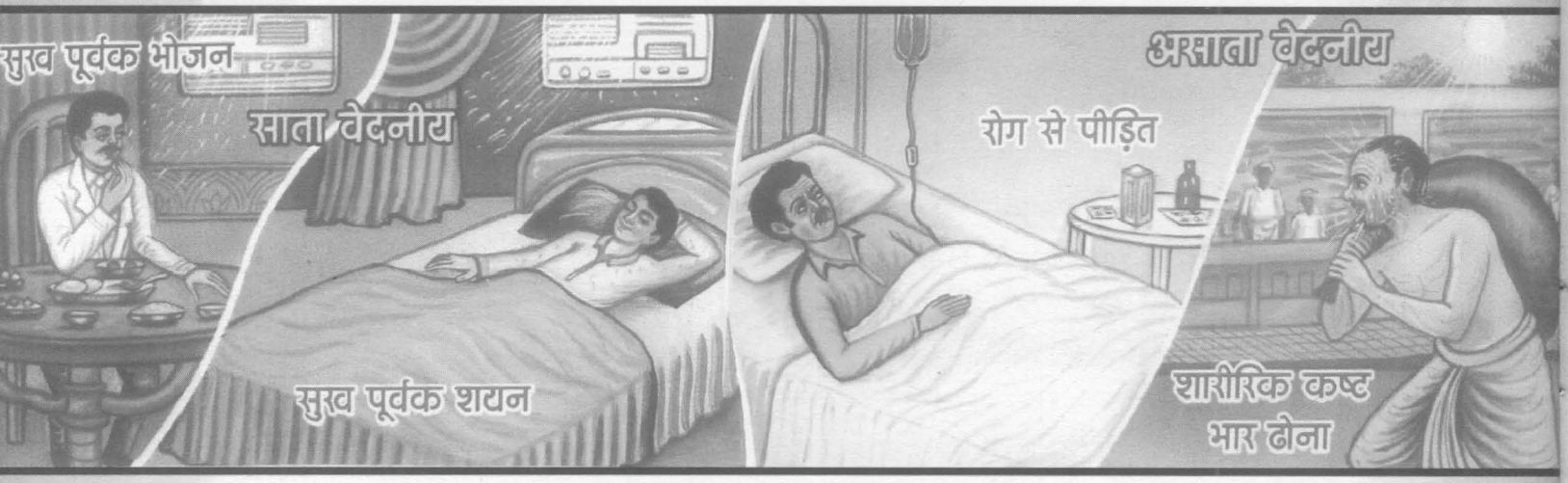

प्यारे बच्चों !

◉ **इस कर्म के दो प्रकार हैं – 1. शाता वेदनीय 2. अशाता वेदनीय**
शाता वेदनीय सुख देता है, अशाता वेदनीय दुःख देता है।

◉ **ऐसी विषमता क्यों ?**
कोई स्वस्थ बनता है तो कोई रोगी बनता है, भयंकर रोग से पीड़ित होता है। यह वेदनीय कर्म के कारण ही होता है।

◉ **इस कर्म का फल ?**

1. अशाता वेदनीय कर्म के कारण ही बुखार आता है।
2. अशाता वेदनीय कर्म के कारण केंसर व क्षय रोग होते हैं।
3. अशाता वेदनीय कर्म के कारण ही सिर व पेट दुखता है।

◉ **इस कर्म का कारण क्या है ?**

1. दूसरे जीवों को दुःख देने से व परेशान करने से यह कर्म बंधता है।
2. दूसरे जीवों की हिंसा करने से व सताने से भी यह कर्म बंधता है।
3. गुरू की और माता-पिता की आज्ञा का पालन नहीं करने से भी यह कर्म बंधता है।
4. गुरू महाराज के मलीन वस्त्रादि देखकर घृणा करने से भी यह कर्म बंधता है।

◉ **इस कर्म का नाश कैसे होता है ?**

1. दूसरे जीवों को सुख देने से, दूसरे जीवों की सहायता करने से,
2. दूसरे जीवों को शांति देने से, दूसरे जीवों के प्राणों की रक्षा करने से शाता वेदनीय कर्म बंधता है जिससे हमें सुख की प्राप्ति होती है।

◉ हमें सुखी होना हो तो शाता वेदनीय कर्म बांधना चाहिये।

◉ **वेदनीय कर्म शहद से लिप्त तलवार के समान है।**

Vedaniya Karma

Dear Children !

- There are two types of this karma- one is "Shata Vedaniya" which gives pleasure / happiness and other is "Ashata Vedaniya" which gives Sorrow / Adversities.
- **Why this difference ?**
  Some one is healthy and some one is ill, some one is suffering from a serious disease. This all is because of vedaniya karma only.
- **Effects of this Karma**
  1. A person can have fever due to this Karma.
  2. A person suffers from cancer or other diseases due to this Karma.
  3. A person has headache, stomach pain etc. due to this Karma.
- **Reasons of acquisition of this karma**
  1. Giving trouble to others or hurting others.
  2. Killing or troubling human beings/ living beings.
  3. Disobeying Dharmagurus (Religious Preacher) or parents.
  4. To disgushed on seeing the dirty clothes of Dharmagurus.
- **How to overcome / get rid of this karma ?**
  1. By helping others, and giving them happiness.
  2. By saving the life of others and giving them peace.
- **If we want to become happy then we should try to acquire shata vedaniya karma.**
- **Vedaniya Karma is like a sword coated with honey.**

मोहनीय कर्म

प्यारे बच्चों !

1. **इस कर्म के कारण व्यक्ति सुदेव, सुगुरू, सुधर्म तत्त्व को पहचान नहीं पाता है।**
2. **इस कर्म के कारण ही व्यक्ति करने योग्य कार्य को न करने योग्य और न करने योग्य कार्य को करने योग्य मानता है।**

◉ **ऐसी विषमता क्यों ?**

कोई हंसता है; कोई रोता है, कोई डरता है, कोई लड़ता है, तो किसी की धर्म करने में रूचि नहीं होती। यह सब इसी कर्म के कारण होता है।

◉ **इस कर्म का फल ?**

1. इस कर्म के कारण व्यक्ति को ज्यादा क्रोध आता है।
2. इस कर्म के कारण व्यक्ति को मान होता है।
3. इस कर्म के कारण हमारी तृष्णा शांत नहीं होती है।
4. इस कर्म के कारण ही हम माया/कपट करते हैं।

◉ **इस कर्म का कारण क्या है ?**

1. सुदेव, सुगुरू व सुधर्म पर शंका करने से मोहनीय कर्म का बंध होता है।
2. क्रोध, मान, माया, लोभ करने से मोहनीय कर्म का बंध होता है।
3. सामायिक, प्रतिक्रमण आदि आवश्यक कर्म नहीं करने से मोहनीय कर्म का बंध होता है।

◉ **इस कर्म का नाश कैसे होता है ?**

1. देव–गुरू की भक्ति करने से व साधर्मिक की भक्ति करने से,
2. दर्शन, पूजन, सामायिक आदि करने से व पाठशाला जाने से,
3. टी.वी., मोबाइल आदि का उपयोग नहीं करने से

मोहनीय कर्म का नाश होता है।

◉ **मोहनीय कर्म शराबी के समान है।**

Mohaniya Karma

Dear Children !

1. Due to this karma person is unable to identify who is true god, true guru and right religion.
2. Due to this karma a person is unable to understand what is right deed and what is wrong deed.

◉ **Why this difference ?**

Some one laughs, some one cries. some one is afraid of things, some one fights, some one does not have interest in religion. All this happens due to this karma only.

◉ **Results of this Karma**

1. This karma makes us angry.
2. This karma make us proudy.
3. This karma make us Greedy.
4. This karma makes us to do fraud, injustice etc.

◉ **Reasons of bondage of this karma**

1. Suspecting religion and dharma gurus, i.e. not having faith on them.
2. Anger, proud, fraud (Maya), greediness result in bondage of this karma.
3. Not doing "Samayik", "Pratikraman" and other religious activities.

◉ **How to overcome or get rid of this karma ?**

1. By worshiping God and Dharma Gurus.
2. By going to "Pathshala" (Religious school), doing Pujan, Darshan, Samayik etc.
3. By avoiding use of T.V., mobile etc.

◉ **This (Mohaniya) Karma is like a drunkard.**

रानी रुक्मणी

श्री नेमिनाथ भगवान के समय की घटना है। जीवन में आने वाले दुःख हमारी ही गलतियों के परिणाम हैं इस बात को साबित करती यह कहानी अवश्य पढिए।

कृष्ण महाराजा की आठ रानियों में से एक रानी का नाम था रुक्मणी। उनके यहाँ पुत्र का जन्म होता है। माँ के लिए पुत्र प्राणों से भी अधिक होता है। पुत्र को तकलीफ हो तो उसकी संवेदना माँ को होती है। ऐसी ही वात्सल्यमयी माता रुक्मणी को जन्म के तत्काल बाद ही पुत्र वियोग हो जाता है। 1-2 दिन का नहीं अपितु 16 साल का वियोग हो जाता है। अपार दुःख और बेचैनी से वे यह समय व्यतीत करती है। वियोग के कारणों का भी पता नहीं चल पाता है।

इस दौरान नेमनाथ भगवान का आगमन द्वारिका नगरी में होता है। कृष्ण महाराजा आठों रानी आदि विशाल परिवार के साथ वंदन करने और देशना सुनने जाते हैं। देशना के बाद महारानी रुक्मणी ने प्रभु को प्रश्न किया -

भगवन्! पुत्र जन्म के तुरन्त बाद मुझे 16-16 वर्षों का पुत्र वियोग हुआ। पूर्व जन्म में मैंने ऐसा क्या कर्म किया था, जिसके फलस्वरूप यह स्थिति निर्मित हुई?

प्रश्न के समाधान में प्रभु ने कहा - **"जगत में जीव अज्ञानता से अनेक कर्म बांधते हैं। कर्मबन्ध में जितना आनन्द अधिक उतना कर्मोदय के समय दुःख अधिक। प्रत्येक दुःख का कारण अपने ही किये हुए पाप हैं।**

अनेक जन्मों के पहले तू और तेरे पति राजा-रानी थे। तुम दोनों घुमने गए। बगीचे में तुमने मोरनी के अंडे देखे। बेहद सुंदर अंडे देखकर तू प्रसन्न हो गई । खूब मस्ती से हाथ में लेकर खेलने लगी। हाथों के छूने से अंडे लाल हो गये। उनकी माता मोरनी वहाँ आई परन्तु रंग बदलने के कारण उन्हें पहचान न सकी। करुण स्वर में वह रोने लगी।

थोड़ी देर बाद बारिश हुई। अंडे धुल गए और फिर से सफेद हो गए। मोरनी ने उन्हें पहचान लिया। इस दौरान 16 घड़ी (1 घड़ी = 24 मिनिट) का समय व्यतीत हुआ था। अर्थात् 16 घड़ी तक मोरनी का अंडों से वियोग होने में तू निमित्त बनी। इसी वजह से तुझे पुत्र का 16 साल का वियोग हुआ। **अन्य को दिये हुए दुःख से अनेक गुना दुःख हमें सहना पड़ता है।** वैसे उदय में आने से पहले तप-जप-आराधना से बुरे कर्मों को धोया जा सकता है ।"

परमात्मा की वाणी सुनते-सुनते रुक्मणी रानी को पूर्व भव का ज्ञान हो गया। स्वयं का पूर्व भव प्रत्यक्ष देखा। थोड़े से सुख के लालच में कितना बड़ा दुःख मिला। कर्म की विचित्रता को जानकर उन्हें संसार के प्रति वैराग्य हुआ। प्रभु के पास दीक्षा स्वीकार की। सुंदर संयम-आराधना-साधना पूर्वक केवलज्ञान प्राप्त करके मोक्ष में गई।

बोध : प्यारे बच्चों !

◎ हम ऐसा आनंद न लें जिससे अन्य जीवों को तकलीफ हो।

◎ हमारे दुःखों के लिए हमारे पाप जिम्मेदार हैं दूसरा कोई नहीं।

4. रानी रुक्मणी / Queen Rukmani

Queen Rukmani

This story is of the time of Lord Shri Neminath. This story proves that all sorrows in life are the results of our own wrong deeds.

King Krishna had 8 queens - one of them was Rukmani. She was blessed with a son. All mothers love their children more than their own life. Mothers instinct comes to know if her child is in trouble. Rukmani was also one such mother. But, unfortunately, as soon as child was born,the two were separated. They were separated not for 1 or 2 days but for 16 years ! She spent these years in extreme pain, sorrow and restlessness. The reason for their separation was not known.

During this time, Lord Neminath comes to Dwarika. The religious King Krishna along with his 8 queens goes to listen to his recitation. After the recitation, Rukmani asked the god a question.

God ! As soon as my son was born I got separated from him for a long period of 16 years. What wrong did I do in my past life that I had such an unfortunate destiny?

The god answered - **"In this world all living beings unknowingly do many wrong deeds. The more we are doing those deeds, the more these karmas result into sorrows. All sorrows are the result of our own sins only.**

In one of your past births your husband and you were king and queen. One day, you both went for a walk in the garden. You saw a female peacock's eggs. Seeing the beautiful eggs you became very happy. You took them in your hands and started playing with them. Eggs turned red by touching hands. After some time both of you left keeping the eggs back in their place. The mother peacock came back to her nest but couldn't recognize her eggs due to the change of colour. She started crying immediately. Human or animal - both love their child very much.

After some time it started raining. The eggs got washed because of the rain and became white again. The peacock recognized her eggs. During this time 16 ghadi (1 ghadi = 24 minutes) had passed. This means that you separated the peacock from her eggs for 16 ghadi. That is why you were separated from your son for 16 years.

We have to suffer thousand times the pain that we give to others. Before they show their effect, we can get rid of them by doing religious activities like jaap-taap etc."

While listening to god, Rukmani came to know about her deeds. She realized that for a little happiness she had to bear such a big sorrow.

Understanding the game of karmas she decided to leave her luxurious life and accepted 'Diksha' from god. Subsequently she gained 'Keval Gyan' and went to 'Moksha'.

Moral: Dear children !

- **We shouldn't enjoy such happiness which gives grief to someone else.**
- **Our sorrows are because of our own sins, and no one else.**

पहेली / Puzzle

प्यारे बच्चों!

नीचे दिया हुआ लांछन 24 तीर्थंकरों में से किसी एक तीर्थंकर का है । ठीक से पहचानकर, प्रश्नों के उत्तर देकर लांछन में रंग भरो।

Dear Children !

Symbol given below belongs to one of the 24 Tirthankars. Answer the following questions corresponding to that Tirthankar and fillup the colour in the symbol.

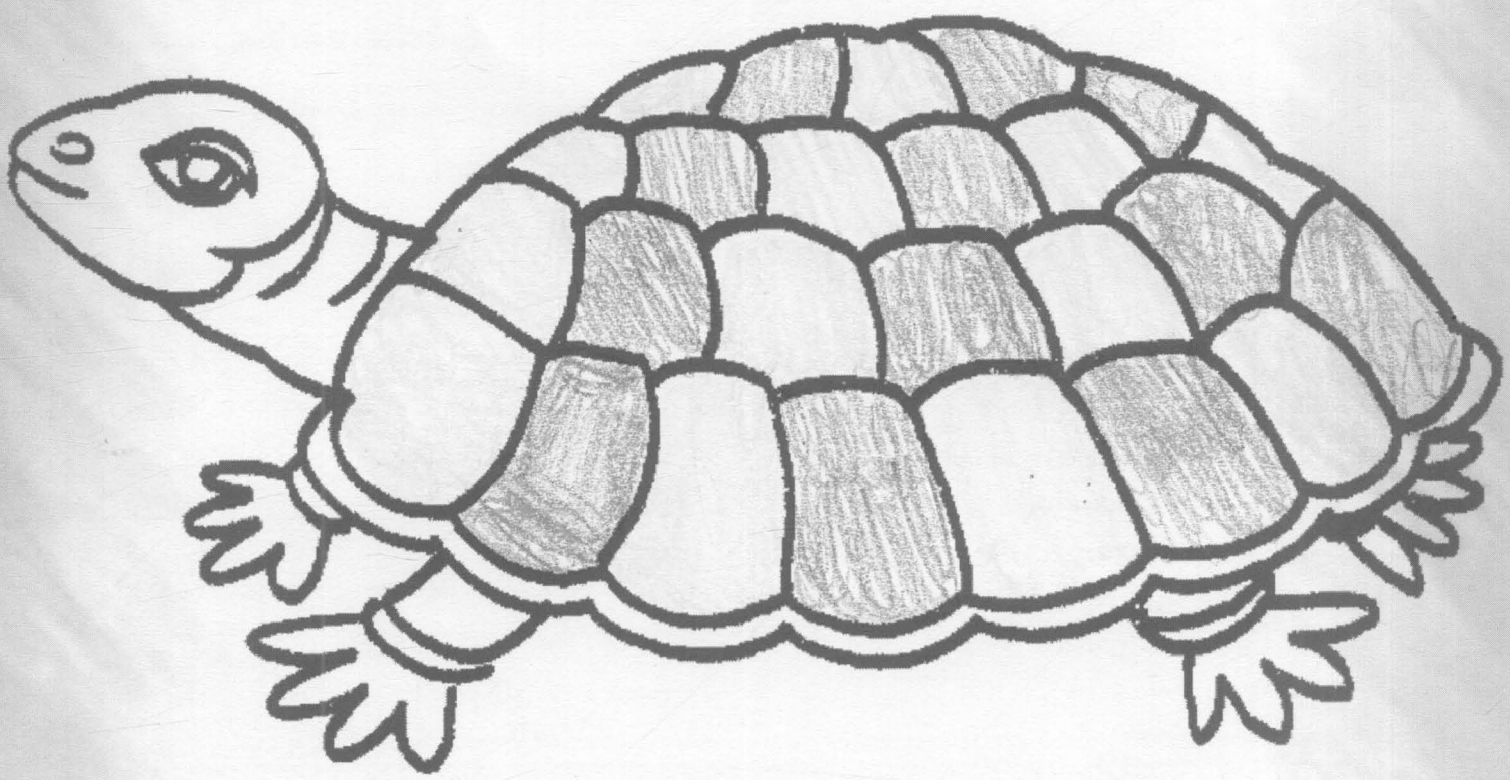

1. कूर्म कौनसे भगवान का लांछन है ? Tortoise is symbol of which Tirthankar ? _____
2. उनकी माताजी का नाम क्या है ? His mother's name is ? _____
3. उनके पिताजी का नाम क्या है ? His father's name is ? _____
4. उनका वर्ण कौनसा है ? His colour is ? _____
5. उनका जन्म स्थल कौनसा है ? His birth place is _____
6. उनका आयुष्य कितना था ? His age was ? _____
7. 24 तीर्थंकरों में से वे कौन से नंबर के तीर्थंकर हैं ?
   What is the serial of that Tirthankar out of 24? _____
8. उनका निर्वाण किस स्थान पर हुआ ? He attained Nirvan at ? _____

उत्तर Answer-

1. मुनि सुव्रत स्वामीजी Munisuvrat Swamiji
2. पद्मा माता Padmamata
3. सुमित्र राजा Sumitra Raja
4. श्याम वर्ण Shyam (Black) Varna
5. राजगृही नगरी Rajgrahi Nagari
6. तीस हजार साल Thirty Thousand Years
7. बीस Twenty
8. सम्मेत शिखर तीर्थ Sammed Tirtha

आओ जानें जिनालय को

प्यारे बच्चों!

जिनालय हम रोज जाते हैं, किंतु अज्ञानता के कारण अशुद्ध वाक्यों/शब्दों का उच्चारण करते हैं । आओ, शुद्ध वाक्य /शब्द क्या हैं उन्हें समझें –

	अशुद्ध वाक्य		शुद्ध वाक्य
1.	मैं भगवान को देखकर आया।	–	मैं भगवान के दर्शन करके आया।
2.	मैंने भगवान पर दो ग्लास भर कर पानी डाला।	–	मैंने भगवान का पानी के दो कलश से अभिषेक किया।
3.	मैंने भगवान को तीन के बदले पाँच फूल चढ़ाये।	–	मैंने भगवान की तीन के बदले पाँच फूल से पुष्पपूजा की।
4.	आज सबसे पहले मैंने भगवान को दूध से नहलाया।	–	आज सबसे पहले मैंने प्रभु का दूध से अभिषेक किया।
5.	मैंने धूप और दीप जलाकर प्रभु के सामने रखा।	–	मैंने धूप और दीप प्रगटाकर प्रभु के समक्ष धरकर धूपपूजा और दीपपूजा की।
6.	आज मैंने भगवान को मिठाई और फल दिया।	–	आज मैंने भगवान की नैवेद्यपूजा और फलपूजा की।
7.	भगवान के सामने मैंने तीन बार मस्तक झुकाया।	–	भगवान के सामने मैंने तीन बार खमासमणे दिये।
8.	आदिनाथ दादा खड़े और शांतिनाथ दादा बैठे हैं।	–	आदिनाथ दादा काउस्सग्ग मुद्रा में और शांतिनाथ दादा पद्मासन मुद्रा में हैं।
9.	आज मैंने स्नात्र पूजा में भगवान के दायें अंगूठे पर चावल रखे।	–	आज मैंने स्नात्रपूजा में भगवान के दायें अंगूठे पर कुसुमांजलि अर्पित की।
10.	मैं प्रभु के दर्शन बाद प्रभु के आस-पास तीन फेरी करता हूँ।	–	मैं प्रभु के दर्शन बाद प्रभु को तीन प्रदक्षिणा देता हूँ।
11.	मंदिर में मैंने झाड़ू निकाला।	–	मंदिर में मैंने काजा लिया।
12.	आज मैंने मंदिर को बंद किया।	–	आज मैंने मंदिर को मांगलिक किया।

Let's know about Jinalaya

Dear Children,

We go to temple every day but due to ignorance we use wrong words/sentences.

Lets understand the correct words/sentences.

	Wrong Statement		Correct Statement
1.	Main Bhagwan ko dekhkar aya.	-	**Main Bhagwan ke darshan kar ke aya.**
2.	Maine Bhagwan par do glass bharkar pani dala.	-	**Maine Bhagwan ka pani ke do kalash se abhishek kiya.**
3.	Maine Bhagwan ko teen ke badale panch fool chadhaye.	-	**Maine Bhagwan ki teen ke badale panch fool se pushp pooja ki.**
4.	Aaj sabse pahale maine Bhagwan ko dudh se nahlaya.	-	**Aaj sabse pahale maine Prabhu ka dudh se abhishek kiya.**
5.	Maine deep aur dhoop jalakar prabhu ke samne rakha.	-	**Maine deep aur dhoop pragata kar Prabhu ke samaksha dharkar deep aur dhoop pooja ki**
6.	Aaj maine Bhagwan ko mithai aur fal diya.	-	**Aaj maine Bhagwan ki naivaidya aur fal se pooja ki.**
7.	Bhagwan ke samne maine teen bar mastak jhukaya.	-	**Bhagwan ke samne maine teen khamasmane diye.**
8.	Aadinath dada khade aur Shantinath dada baithe hain.	-	**Aadinath dada kaussagga mudra Mein aur Shantinath dada padmasan mudra mein hain.**
9.	Aaj maine snatra pooja mein Bhagwan ke dahine anguthe par chawal rakhe.	-	**Aaj maine snatra pooja mein Bhagwan ke dahine anguthe par kusumanjali arpit ki.**
10.	Main Prabhu ke darshan baad prabhu ke aas-paas teen feri karta hun.	-	**Main Prabhu ke darshan baad Prabhu ko teen pradakshina deta hun.**
11.	Mandir mein maine zadu nikala.	-	**Mandir mein maine kaja liya.**
12.	Aaj maine mandir ko bandh kiya.	-	**Aaj maine mandir ko mangalik kiya.**

अष्टमंगल / Ashtamangal

प्यारे बच्चों!

अपने शास्त्रों में आठ प्रकार के मंगल चिन्ह बताए गए हैं उन्हें अष्टमंगल कहते हैं। ये मांगलिक (शुभ) माने जाते हैं। इन्हें भगवान के सामने आलेखना (चावल से बनाना) होता है। आप मंदिर में साथिया बनाते हो, तो ये आठ भी बना सकते हो। अष्टमंगल की पट्टी घरों के दरवाजे पर लगी होती हैं। देवलोक के देवविमान में, समवसरण में ये आकार होते हैं। गुरूभगवंत के ओघे में भी ये आकार होते हैं। उन आठ में से दो यहाँ बताए हैं। सावधानीपूर्वक देखकर रंग भरो।

कलश Kalash

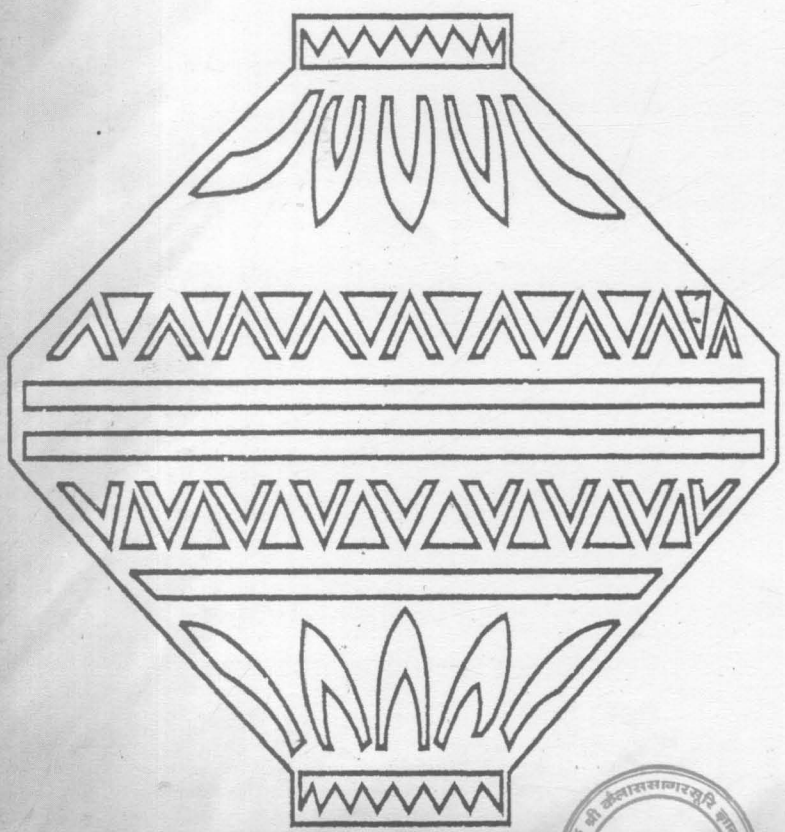

श्रीवत्स Shrivatsa

Dear Children!

There are 8 types of "Mangal Sign" in our "Shastras" which are called "Ashtamangal". These are considered as good signs. These are made out of rice in front of God. If you can make a "Sathia" in the temple, these can also be made. "Ashtamangal" can also be seen on the house-doors. in the "Dev Viman" of heaven, in the "Samavsaran" and in the "ogha" of "Guru Bhagavant". Two of them are given here. Colour them carefully.

कोबा (गांधीनगर) पि. ३८२००७

प्यारे बच्चो !
खाने-पीने की चिजो के चित्र दिये गये।
भक्ष्य (खाने योग्य) के सामने (✓) करे एवं
अभक्ष्य (खाने अयोग्य) के सामने (✗) करे।

Dear Children !
Identify BHAKSHYA & ABHAKSHYA Activity.
Tick " ✓ " for BHAKSHYA & "✗" for ABHAKSHYA Activity

RICE ✓

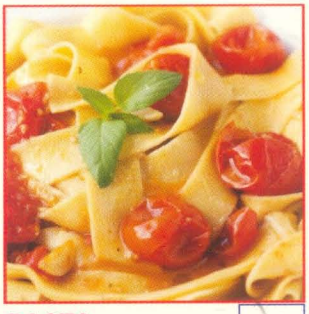
PASTA ✗

DAHI WADA ✗

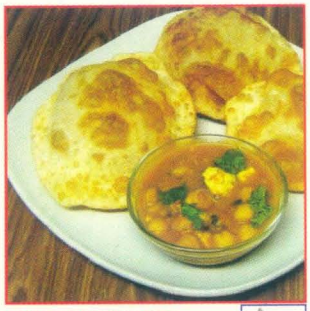
CHOLE PURI ✗

BURGER ✗

TEA ✓

CAKE ✗

HONEY ✗

PANEER ✗

NOODLES ✗

PICKLES ✗

SANDWICH ✗

PAV-BHAJI ✗

IDLI-WADA ✓

OIL ✓

BUTTERMILK ✓

MILK ✓

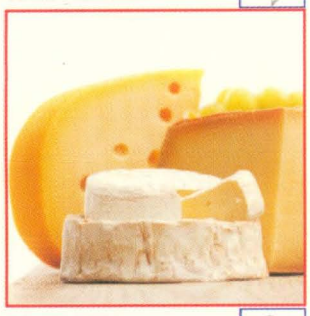
CHEESE ✗

BUTTER ✗

SAMOSA ✗

संस्कार सहयोगी

Sanskar Sahyogi

आलोक वडालिया | अरुहंत मेहता | अर्णव शाह | अरिषा जैन | भव्य रामाणी | धीर रामाणी | हेत शाह | हिया शाह | कल्प शाह | महक शाह | नवम चौरड़िया

नीव नाहर | प्रथम शाह | पर्व शाह | शौर्य शाह | शौर्य नगावत | शौर्य गोटेवाला | तन्मय शाह | दिशी जैन | आरव तांतेड़

संस्कार सहयोगी / Sanskar Sahyogi

आप ६३००/- रु. का दान देकर संस्कार सहयोगी बन शकते है । आपके लाडले का फोटो १२००० मेगेझीन मे प्रकाशित होंगा ।

You can become 'Sanskar Sahyogi' by giving donation of Rs. 6300/-. Photo of your child will be published in 12000 copies of this magazine.

Please give attantion

Now a days, our children lost their childhood in technology & Western culture. So that, they forget the importance of family life, religion, culture & nation.

If we want to make our children aware of culture & religion, want to bring their childhood back by saving them from bad effects of Mobile, T.V.,Movies & make them ideal child....pls. take mobile from their hands with love & put this books in their hands.

कृपया ध्यान दिजीये...

वर्तमान समय में भौतिकता एवं टेकनोलोजी की आंधी में हमारे बच्चे ऐसे गूम हो गये है की धर्म, संस्कृति, राष्ट्र, परिवार आदि सब भूल गये है।

अगर हमे हमारे बच्चो को सुसंस्कृत करना है, मोबाइल, टी.वी., सिनेमा के दूषणो से बचाकर फिरसे उनका बचपन वापस लाना है और एक आदर्श बालक और भविष्य का आदर्श श्रावक बनाना है तो अवश्य उनके हाथ से प्रेम से मोबाइल ले के यह पुस्तक थमा दिजीये...

Jainism With Art

अंक 5 से 8 की किंमत रु. 200/-

Book no. 5 to 8 Rs. 200/-

After the tremondous response from children, your favourite treasure of knowledge, Part no. 5 to 8 is in your hands.

After January 2018, 'Jainism with Art' will be published every three month. you can become member by filling up form attached with this copy. You can receive magazine at your doorstep.

कला द्वारा संस्कार सिंचन

बालको द्वारा अद्भुत आवकार एवं प्रतिसाद के बाद जोरदार मांग के वजह से आपका चहीता, मनपसंद ज्ञान का खजाना अंक ५ से ८ के रुप में आपके हाथ में है।

जनवरी २०१८ से 'कला द्वारा संस्कार सिंचन' मेगेझीन हर तीन महिने प्रगट होगा। इसके साथ दिये गये फोर्म भरकर आप भी जल्द सदस्य बनीये और घरबेठे मेगेझीन पाईये।

Three Year Three Monthly Magazine Membership Fee Rs. 500/- only

त्रिवर्षिय त्रिमासिक मेगेझीन लवाजम रु. ५००/- मात्र

फोर्म एवं रकम भेजने के संपर्कसूत्र

पूर्णानंद प्रकाशन

भावनाबेन शाह
Mo. 98193 17766
103, मधुसदन एपार्ट., गीतांजलि - जैन देरासर की गली, हरिदास नगर, बोरिवली (वेस्ट) मुंबई-92

गीरीशभाई दोशी
Mo. 7977944600
701, शालीभद्र एपार्टमेन्ट, अरिहंत पार्क, सुमुलडेरी रोड, सुरत.

पारस शाह
Mo. 81281 45044
बी-404, अयोध्यापुरम् एपार्ट., कहान फलिया, कतारगाम, सुरत.

Mann 81281 45044